Literacy for a Billion

Movie: Gharaonda
Year: 1977

Song: Ek Akela Is Shehar Mein
Lyricist: Gulzar

हूँ ...
हा ...
एक अकेला इस शहर में
रात में और दोपहर में
आबो दाना ढूँढ़ता है
आशियाना ढूँढ़ता है

एक अकेला इस शहर में
रात में और दोपहर में
आबो दाना ढूँढ़ता है
आशियाना ढूँढ़ता है

एक अकेला इस शहर में

दिन ख़ाली ख़ाली बरतन है
दिन ख़ाली ख़ाली बरतन है
और रात है जैसे
अँधा कुँआ
इन सूनी अँधेरी आँखों में
आँसू की जगह
आता है धुँआ
जीने की वजह तो कोई नहीं
मरने का बहाना ढूँढ़ता है
ढूँढ़ता है ढूँढ़ता है

एक अकेला इस शहर में
रात में और दोपहर में
आबो दाना ढूँढ़ता है
आशियाना ढूँढ़ता है

एक अकेला इस शहर में

इन उम्र से लंबी सड़कों को
इन उम्र से लंबी सड़कों को
मंज़िल पे पहुँचते देखा नहीं
बस दौड़ती फिरती रहती हैं
हमने तो ठहरते देखा नहीं
इस अजनबी से शहर में
जाना पहचाना ढूँढ़ता है
ढूँढ़ता है ढूँढ़ता है

एक अकेला इस शहर में
रात में और दोपहर में
आबो दाना ढूँढ़ता है
आशियाना ढूँढ़ता है

एक अकेला इस शहर में
हूँ ...
हूँ ...

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.